।। पंचम पाठ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
तीन बाण कन्धे पर धारी । अहिला का लाला अवतारी ।।
शिव का भक्त है प्रेम दुलारा । महान तपस्वी शिव का प्यारा ।।
इस जैसा कोई बल में नाहीं । चतुर बुद्धि और भक्ति मांही ।।
अहिलवती ने पास बैठाया । धीरज देकर ज्ञान बताया ।।
वचन विमुख नहीं होना लाला । चाहे सन्मुख हो रखवाला ।।
हार की पक्ष तुझे लेनी है । शिव ने कहा वो ही करनी है ।।
अभी चलो जंगल के मांही । बाण सीखने घूमन ताहीं ।।
माँ बेटे दोऊँ बन में आये । पहरेदारों को बुलवाये ।।
अहिलवती ने गौर किया है । सेवकगण को बुला लिया है ।।
वापस चल दो वेग चाल से । मत ना डरियो महाकाल से ।।

कोशासुर की सेना आई । सेवक गण संग राड़ मचाई ।।
हा हा कार हो रहा भारी । मारो पकड़ो की किलकारी ।।
नाग देव रण माहीं जूझे । बिन मालिक कोई बात न बूझे ।।
महान फौज ने डेरा डाला । कोशासुर का आया लाला ।।
नाम खडँगासुर कहलावे । तेज खड्ग से युद्ध रचावे ।।
बाँध लिये हैं पहरेदारी । वापस चल देई सेना सारी ।।
बर्बरीक आया बलधारी । गरजन करके दी ललकारी ।।
अहिलवती भी भाग के आई । नहीं देखें हैं अपने सिपाही ।।
महाक्रोध तन में भर आया । बर्बरीक को हुक्म सुनाया ।।
पहरेदारों को पहले छुड़वाओ । फिर तुम अपना बाण चलाओ ।।
वरना फौज संग पहरेदारी । मारे जावें आज्ञाकारी ।।

दोहा - खडंगासुर ने गरज करी, किसने मारा बाण ।
आओ सन्मुख काल के, चल के खुद वो आप ।। क ।।
जीवित नहीं है छोडता, चाहे हो महाकाल ।
क्रोध से मेरा तन उबले, मैं नहीं करता टाल ।। १०८ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बर्बरीक सन्मुख आकर बोला । मैंने मारा क्यों करे रोला ।।
उसने झूठी बानी उचारी । इसलिए मौत का हुआ हकदारी ।।
तू भी पहरेदारी छोड़ दे । या मेरे संग युद्ध ओट ले ।।
खडंगासुर ने खड्ग चलाया । बर्बरीक ने वार उकाया ।।
उछला क्षत्री वंश केसरी । अहिला पुकारी अब क्या देरी ।।
मार मार इस दुष्ट दानव को । फिर नहीं तंग करे मानव को ।।

बर्बरीक ने गर्दन पकड़ी । बाहु बल से जोर से जकड़ी ।।
आँख निकल गई खडंगासुर की । सुरता ला लई उसने धुर की ।।
मौत के घाट उतार दिया है । सेवक गण को सम्भाल लिया है ।।
फिर मारा है बान तान कर । लिया निशाना जोर कान कर ।।
सब दानव किलकारी मारें । हाय मरे बस याही उचारें ।।
मौत के घाट सभी को उतारा । वापस बाण भी आ गया प्यारा ।।

दोहा - पहरेदार चारों होश कर, झुककर करी प्रणाम ।
ये दानव थे अन्यायी, जगती में सरनाम ।। क ।।
मुनि लोग घबराय कर, नहीं आते बन मांय ।
कोशासुर ही महाराजा था, अब भय कोई नांय ।। १०९ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
समाचार सब ओर हो गया । कोशासुर चिर नींद सो गया ।।
उस बन में कोई भय नहीं है । माँ के संग एक बली वही है ।।
फत्ता गूजर अति धनवानी । बल में भी था वो बलवानी ।।
अहिलवती के पास में आया । प्रणाम किया और शीश नवाया ।।
आशीर्वाद दियो क्षत्राणी । क्या चाहते हो हे बलवानी ।।
फत्ता गूजर भेद बताया । मैं हूँ गूजर जात का जाया ।।
गऊवें मेरे पास घनेरी । उन्हें चराऊँ उठ के सवेरी ।।
ये बन है हरियाला प्यारा । गऊवें चराऊँ हुक्म तुम्हारा ।।
अहिलवती बोली मुस्का कर । गऊँवे चराओ निर्भय आकर ।।
क्षत्री धर्म और क्या रखता है । गऊ ब्राह्मण की सेवा करता है ।।
इस बन में है घास घनेरा । गऊवों का यहाँ होवे बसेरा ।।

हमको खुशी होवेगी भारी । हर पल रक्षा करें तुम्हारी ।।

दोहा - फत्ता गूजर चल दिया, गऊ घेर के लाय ।
क्षत्राणी ने आज्ञा दीनी, मन में मगन हो जाय ।। क ।।
भोर होवत ही आ गई, गऊवें बन्धी कतार ।
हिल मिल कर गऊवें चरे, मन में खुशी अपार ।। ११० ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
गाय रँभावे अति सुहावें । भर भर प्याला दूध पीलावें ।।
दूध का भोग है शिव के लगता । बर्बरीक पी दूध है पलता ।।
अहिलवती भी भर के कटोरा । कहती लाला ओर पीवो थोरा ।।
फत्ता गूजर ग्वालों के संग । गऊ चरावे छा रही उमंग ।।
गऊवें भी अति मग्न हुई हैं । हरियाली के लग्न हुई हैं ।।
भर भर देग दूध को देवें । हरी घास बन में चर लेवें ।।
बर्बरीक भी गऊएं चरावे । धनुषबाण कन्धे लहरावे ।।
माता बाण नीति सिखलावे । भाग भाग कर गऊँए मुड़ावे ।।
हर पल लाले को यही कहती । आन धर्म की तब ही रहती ।।
गऊ ब्राह्मण की सेवा करना । और किसी से चाहे न डरना ।।
ब्राह्मण को कभी नहीं सताना । वरना पड़ेगा लाल पछताना ।।
ब्राह्मण को नित दण्डवत करियो । उनकी चरण रज माथे धरियो ।।

दोहा - साँझ की बेला आ गई , शिव मन्दिर गये आय ।
गऊएं अपने बछड़ो ताई, दूध पिलाने जाय ।। क ।।
शिव पूजा की लगन हो, अहिला करे अरदास ।
हाथ जोड़ कर करे आरती, बर्बरीक बैठा पास ।। १११ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
नाग देव खड़े पहरेदारी । उनको हुक्म दिया है भारी ।।
जब तक हम पूजा करते हैं । शिव के तांई जल भरते हैं ।।
हमसे बात कभी नहीं करना । पूजा विधि के बाद में कहना ।।
रात चांदनी मोहनी आई । हरियाली में अति सुहाई ।।
माँ बेटे दोऊ पूजा करते । झरने का जल कलश में भरते ।।
फत्ता गूजर दूध निकाले । भर भर वर्तन देग में डाले ।।
ग्वाले भी सब काम करत हैं । देग में दूध निकाल भरत हैं ।।
इतने में कई डाकू आये । भील के रुप में तीर चलाये ।।
फत्ता गूजर को ललकारा । आज आ गया काल तुम्हारा ।।
गऊएँ घेर ली भीलों ने । जंगली मुर्ख मति हीनो ने ।।
फत्ता गूजर घायल होकर । चला शिवालय की ओर रोकर ।।
हे क्षत्राणी हमें बचाओ । गऊवों को तुम वापस लाओ ।।
डाकू बहुत बली यहां आये । बहुत घनेरे बाण चलाये ।।
नाग देव बोले समझाकर । फत्ते गूजर को बिठाला कर ।।
माँ बेटे दोऊ ध्यान लगन में । शिव भक्ति के प्रेम मगन में ।।
थोड़ी देर तुम होश सँवारों । कारज पूरण होय तुम्हारो ।।
अहिलवती झनकार सुनी है । गऊ भक्ति तो सबसे जूनी है ।।
शिव प्रतिमा को पुष्प चढ़ाये । कर विनती और शीश नवाये ।।
बाहर आकर सुनी कहानी । लाल नेत्र गरजी क्षत्राणी ।।
बर्बरीक को अहिला बुलाई । गऊ भक्ति की राग सुनाई ।।

दोहा - सुनकर वाणी मात की, आया दौड़ के पास ।
क्या आज्ञा है मेरी माता, हुक्म करो वही खास ।। क ।।
अहिला बोली क्रोध कर, डाकू गये हैं आय ।
इस गूजर की सारी गऊँये, ले गये अभी चुराय ।। ११२ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
जाओ दौड़ के घेरा डालो । गऊओं को पंजे से निकालों ।।
बर्बरीक दौड़ चला बलवानी । मिल गये डाकू जो अभिमानी ।।
बर्बरीक ने ललकार लगाई । भीलों ने फिर रार मचाई ।।
सब भीलों ने बाण चलाये । बर्बरीक सब काट भगाये ।।
एक बाण छोड़ा बलवानी । बचा नहीं कोई मानव प्राणी ।।
गऊएँ घेर टोर कर लाया । फत्ते को बड़ा आनन्द छाया ।।
माता ने शाबाशी दीनी । लाले को गोदी भर लीनी ।।
गऊएँ अपने स्थान आ गई । ग्वालों के भी खुशी छा गई ।।

दोहा - एक रोज श्री हरित ऋषी, डेरो लगायो आय ।
संग में चेले बहुत घनेरे, मोहनी स्वर में गाय ।। क ।।
पास शिवालय आय कर, झरने का जल देख ।
यज्ञ यहीं परहमको करना, इसमें मीन न मेख ।। ११३ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अहिलवती भी दौड़ के आई । हरित ऋषी को प्रणाम सुनाई ।।
हे मुनि राज कहो क्या सेवा । भाग हमारे पधारे देवा ।।
हाजिर है सेवक मेरा लाला । हुक्म करो बैठे मृगछाला ।।
मेवा फल का भोग लगाओ । जो आज्ञा हो हमें सुनाओ ।।
हरित ऋषी ने जब यह जाना । है क्षत्राणी इसका बाना ।।

इसका लाला साथ में आया । है कोई वीर बली का जाया ।।
धनुष बाण कन्धे धरता है । कोई काल से नहीं डरता है ।।
मुनि राज ने वचन सुनाया । यज्ञ का हमने मता उपाया ।।
पर दानव यहाँ बहुत घनेरे । ऊधम करेंगे आकर डेरे ।।
अहिलवती ने शीश नवाकर । मुनि चरणों में नजर टिकाकर ।।
मेरा लाला अति सयाना । पहने है केसरिया बाना ।।
क्षत्री का पहनावा प्यारा । आपकी सेवा करे दुलारा ।।
निर्भय होकर यज्ञ रचाओ । मण्डप को अति मोहना सजाओ ।।

दोहा - मुनि ने अपना योगबल, पल में दिया दिखाय ।
हवन मण्डप पास शिवालय, मोहिनी दियो रचाय ।। क ।।
सब सामग्री सज गई, बर्बरीक पहरेदार ।
रात और दिन पहरे देवे, रहे बहुत होशियार ।। ११४ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
ऋषी विधि से ये मन्त्र उचारे । शिष्य भी घृत की आहुति डारे ।।
अग्नि प्रचण्ड हुई अति भारी । लपटे निकली लाल अंगारी ।।
शुद्ध हवा आकाश में छाई । बर्बरीक के मन में अति भाई ।।
मन्त्रों का उच्चारण होवे । यज्ञ जीव के पाप को धोवे ।।
गऊओं का घृत शुद्ध होवत है । आहुति में वो ही जोवत है ।।
फत्ता गूजर गऊएँ चरावे । यज्ञ के खातिर घृत पहुँचावे ।।
सोमासुर ने जब यह जाना । यज्ञ करे कोई निपट अज्ञाना ।।
अभी पलक में उसे मिटाऊँ । यज्ञ करने का मजा चखाऊं ।।
लेकर फौज चला अभिमानी । आ पहुँचा जहाँ खड़ा बलवानी ।।

हाड़ मांस लाकर के डारे । हवन पास अभिमानी उछाले ।।
बर्बरीक ने आ ललकारा । यज्ञ नष्ट नहीं होगा हमारा ।।
वापस भागो जहाँ से आये । वरना कोई जीवित नहीं जाये ।।
सोमासुर ने वाण चलाया । बर्बरीक ने काट गिराया ।।
सारी फौज उलट कर आई । बर्बरीक के नहीं समाई ।।
बाण तानकर कस कर मारा । सोमासुर को धरणी पछारा ।।
सारी फौज मृत्यु को धाई । हरित ऋषी के खुशियां छाई ।।

दोहा - यज्ञ कीनो आनन्द से, सेवक है होशियार ।
अहिला पहरे पर खड़ी, सेवा करे अपार ।। क ।।
पूर्ण आहुति दे देई, यज्ञ विसर्जन होय ।
ऋषि दियो आशीष प्रेम से, तुमसा बली न कोय ।। ११५ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बाशक जी इतने में पधारे । मुनि राज को प्रणाम पुकारे ।।
अहिलवती चरणां रज लीनी । आवभगत पिता जी की कीनी ।।
बर्बरीक ने शीश नवाया । नाना जी के दर्शन पाया ।।
अहिलवती ने बात बताई । यज्ञ हवन की वेदी रचाई ।।
हरित ऋषि जी बड़े दयालू । धन्य भाग जो आये कृपालू ।।
सोमासुर ने उधम मचाई । अपनी करनी उसने पाई ।।
बाशक जी अमृत लाये हैं । दोहते तांई चलें आये हैं ।।
मुनि राज के अर्पण कीन्हा । हरित ने अमृत लाल को दीन्हा ।।
पीवो अमृत हे बलवानी । अमर रहेगी तुमरी कहानी ।।
क्षत्री वंश के दीपक उजले । माता की शिक्षा से सम्भले ।।

बर्बरीक ने अमृत पी लिया । मुनि राज से आशीष ले लिया ।।
हरित रीषि चले निज स्थाना । संग शिष्य करके प्रस्थाना ।।
बाशक अमृत देने आये । आशीष देकर वापस धाये ।।

दोहा - गऊएं हिलमिल चर रहीं, मगन होय धर धीर ।
बर्बरीक गऊओं का रखवाला, महाबली बलधीर ।। क ।।
हरियाली मोहनी खिली, भँवरें करें गुंजार ।
मन्द मन्द चले हवा रसीली, मनमोहनी है बहार ।। ११६ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
फत्ता गूजर मगन हो बोले । राग रागनी करता डोले ।।
जिसका रक्षक है बलधारी । उसको क्या चिन्ता हो भारी ।।
सिंह भगैरा जंगली जाती । सन्मुख आने की नहीं छाती ।।
दूर ही दूर गरज कर रहते । पास न आवें भय से डरते ।।
गऊ बछड़ो की बंधी कतारें । चरती घास बली का निहारें ।।
रम्भां रम्भां कर गीत सुनावें । हरियो घास मगन हो खावें ।।
बर्बरीक भी है रखवाला । क्षत्री वंश का चमक उजाला ।।
अहिलवती भी साथ में घूमे । बाण विद्या सिखलाती झूमे ।।
पेड़ो पर चढ़ चढ़ के पुकारे । आवो यहाँ हे लाल हमारे ।।
बर्बरीक जब पास में आवे । दूजे पेड़ अहिला चढ़ जावे ।।
ममता के संग खेल रचावे । लाले के पर हाथ न आवे ।।

दोहा - दरखत बड़े सुहावने, फुलों सजी बहार ।
अहिलवती लाले संग खेले, महिमा अपरम्पार ।। क ।।
इसी पेड़ पर उसी डाल पर, चढ़कर करे किलोल ।
माँ और बेटे की ममता को, कौन बतावे मोल ।। ११७ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
साँझ ढले शिव मन्दिर आवे । शिव चरणों में शीश नवावें ।।
दूध मेरा का भोग लगावें । मां और बेटा आप भी खावें ।।
झरना पास में गीत सुनावे । लहर उछलती नाच दिखावे ।।
पक्षी चहके मधुरी बाणी । कोयल राग की अमर कहानी ।।
पुष्प वाटिका इसको कहते । मां बेटे बलवानी रहते ।।
कोई असुर आने नहीं पावे । आवे जो नहीं वापस जावे ।।
क्षत्राणी से डरते सारे । लाले का भय प्राण निकाले ।।

।। नारदजी का आना और महाभारत ।।
।। युद्ध का समाचार कहना ।।

दोहा - माता पूजा कर रही, लाल चरावे गाय ।
घास चरावे पानी पिलावे, मोड़ मोड़ के लाय ।। क ।।
फत्ता गूजर दूध बिलोये, माखन बेचन जाय ।
उसको क्या चिन्ता गउसों की, बैठा मोज उड़ाय ।। ११८ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बर्बरीक तो गाय चरावे । सुबह शाम नित पानी पिलावे ।।
नारद जी आये हैं चलकर । बर्बरीक गये पास हैं चलकर ।।
नारायण कह वीणा बजाई । वीणा स्वर में राग सुनाई ।।
बर्बरीक ने प्रणाम करी है । नारद की मनवार करी है ।।
आओ पधारो योगी देवा । हुक्म करो मैं बजाऊं सेवा ।।
मात हमारी पूजा करती । तुमरी बाट नित जोया करती ।।
आओ पधारो दर्शन देवो । लायक सेवा मुख से कह देवो ।।

नारद जी बोले मुस्काकर । वीणा की आवाज बजाकर ।।
पास तुम्हारे हम आये हैं । नया संदेशा संग लाये हैं ।।
माता से नहीं बात करूँगा । जल्द कदम वापस ही धरूँगा ।।

दोहा - नारद बर्बरीक दोनों खड़े, कर रहे बात विचार ।
अहिलवती भी चलकर आई, कर पूजा श्रृंगार ।। क ।।
नारद मुनि को देख कर, रुक गये वहीं पर पाँव ।
छुपकर सुन रही सारी बतियाँ, एक पेड़ की छाँव ।। ११९ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बर्बरीक कहे मुनि राज से । आप पधारें कौन काज से ।।
नारद बोला बात बताओ । बलियों में बलवान कहाओ ।।
तीन बाण केवल क्यों रखते । चौथा किसलिए नहीं परखते ।।
इन तीनों में क्या गुण पावो । रण में कैसे जीत के आओ ।।
बर्बरीक ने भेद बताया । एक बाण से करूँ सफाया ।।
कोटिन कोटि हो चाहे प्राणी । सबको मारे तीर निशानी ।।
शिवजी ने वरदान दिया है । संग में मुझसे वचन लिया है ।।
हार की पक्ष लिया करता हूँ । महाकाल से नहीं डरता हूँ ।।
आप दया से शक्ति पाई । धन्य धन्य जीये मेरी माई ।।
नारद जी ने जब यह जाना । ऐसा नहीं कोई बलवाना ।।
बोले मैं संदेश सुनाऊँ । वीरों की मैं बात बताऊं ।।
कौरव पाण्डव दो भाई हैं । बड़े वीर और बलदाई हैं ।।
कौरव कपट किया था भारी । बना दिया दर दर का भिखारी ।।
अब पाण्डव बनवास से आये । कृष्ण के संग से क्रोध में छाये ।।

कृष्ण अहीर वंश का लाला । द्वारकापुरी का रहनेवाला ।।
मन मोहन घनश्याम बिहारी । कहते हैं उन्हें कुन्ज बिहारी ।।
मनमोहन पाण्डव संग रहते । हर बातों में धीरज धरते ।।
कौरव सेना में बलवानी । पाँचो पाण्डव अकेले प्राणी ।।
उनके संग श्री कृष्ण अकेला । छः प्राणी ने रच दिया खेला ।।

दोहा - रण को डंको बज गयो, सात दिनों के बाद ।
लख दल कौरव के संग में, बाकी दिन रहे सात ।। क ।।
पांडव कृष्ण के पास में, फौज नहीं है कोय ।
उनकी रक्षा तुम जा करियो, भलो तुम्हारो होय ।। १२० ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बर्बरीक ने तब वचन सुनाया । ये संदेश तो अति सुहाया ।।
माता से आज्ञा ले आऊँगा । पाण्डव जन की मदद करूँगा ।।
निश्चय रण के मांही जाऊँ । हार पक्ष में जीत कराऊं ।।
नारद जी चल दिये पथ गामी । तिकड़म बाजी में सरनामी ।।
नारद जी मन सोचते जावें । मन ही मन में अति मुस्कावें ।।
मनमोहन रहते जिस दल में । जीत करा देते हैं पल में ।।
कोरव पक्ष में हार बनेगी । बर्बरीक की कमान तनेगी ।।
मनमोहन जी हैं छलिहारा । अब देखेंगे काहे विचारा ।।
नारद मन में खूशी मनावें । भगवान संग में भक्त लड़ावें ।।

दोहा - अहिलवती सब सुन लई, नारद जी की बात ।
अब क्या होगा मेरे दयालू, चैन नहीं है स्यात ।। क ।।
जिधर कृष्ण रण में खड़े, हार कभी ना होय ।
तेरा लाड़ला ऊधम करेगा, अपने वंश को खोय ।। १२१ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
भर चिन्ता में चली क्षत्राणी । याद सतावे रण की कहानी ।।
भाग के शिव मन्दिर में आई । खड़ी पड़ी है सुध बिसराई ।।
शिव के बान्थी भर के रोवे । अब मेरा दुख कोई ना खोवे ।।
ये क्या आपने रच देई माया । हे विधना तुझे तरस न आया ।।
कौन है मेरा अब रखवाला । निश्चय जावे रण में लाला ।।
अपने लाल को कोई माता । रोक सके नहीं रण में जाता ।।
अगर रोके तो प्रण घटता है । मर्यादा का चीर फटता है ।।
हे शिव शंकर आप बताओ । अपनी दुलारी की लाज बचाओ ।।
मैं नहीं समझ सकी ये कहानी । आप बताओ करो मेहरबानी ।।
मेरे पति ने सुधि नहीं लीनी । हर पल रक्षा आपने कीनी ।।
अब क्यों मुख फेरा है दाता । कैसे तोड़ रहे हो नाता ।।

दोहा - दूर से बोलता बर्बरीक, आया मात के पास ।
नई कहानी आज सुनाऊँ, तु क्यूँ भई उदास ।। क ।।
नारद जी ने आय कर, दिया संदेश एक ।
कौरव पाण्डव यूद्ध करेंगे, मैं भी आऊँ देख ।। १२२ ।।

।। भजन ।।

(तर्ज - मिलती है जिन्दगी में)

धीर से बोले बर्बरीक, माता के कान में,
मैया तू भेज दे मुझे, रण के मैदान में ।। टेर ।।
करुवँशियो ने युद्ध का, डंका बजा दिया,
चुन-चुन के सारे वीरों को, उसमें बुला लिया,
मुझको बुला रही धरा जग के कल्याण में ।। १ ।।

हँस कर विदा करो मुझे, कहता तेरा ललन,
हारे का साथ दूँ सदा, देता हूँ ये वचन,
आये कभी भी आँच ना, मैया की शान में ।। २ ।।

आज्ञा मिलें जो माँ तेरी, जाये ये तेरा लाल,
मौका मिला है भाग्य से, मैया मुझे न टाल,
युद्ध का करूँ मैं फैसला, बस एक वाण में ।। ३ ।।

माथे पे वीर पुत्र के, टीका लगा दिया,
सारा खजाना प्यार का, उसपे लुटा दिया,
माता को क्यूँ ना गर्व हो, ऐसी सन्तान पे ।। ४ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
आज्ञा देवो हे मेरी माता । तुमरा बेटा रण में जाता ।।
युद्ध जीत के मैं आऊँगा । तब तुमरे दर्शन पाऊँगा ।।
अहिलवती ने सुनकर वाणी । गरजन करके उठी क्षत्राणी ।।
भागी जंगल माहीं आई । बर्बरीक कहे ठहरो माई ।।
पेड़ के पेड़ उखाड़न लागी । सुन्दर बन को उजाड़न लागी ।।
क्रोध भरी बिचरी क्षत्राणी । लाल नेत्र कर बनी भवानी ।।
धर चण्डी को रूप गरजती । नेत्र से अग्नि प्रबल उगलती ।।
मुख से कुछ बोले नहीं वाणी । पहाड़ उखाड़ रही क्षत्राणी ।।
फैंके पत्थर उठे धमाका । जंगल थर थर कर घबराता ।।
हा हा कार मचा है वन में । पक्षी हो गये विचलीत क्षण में ।।
काले केश खिले हैं तनकर । बिचरे केहरी नाग हैं बनकर ।।
भुजा जोश भर कर दहलावे । उधर नीर रस भर फहरावे ।।

दोहा - बर्बरीक ने दौड़कर, पकड़ लिये हैं पाँव ।
मेरी भूल हुई भारी, करो दया की छाँव ।। क ।।
क्रोधी शान्त कर बोलिये, हे जननी मेरी मात ।
देख तिहारो क्रोध मेरो, थर थर काँपे गात ।। १२३ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
युद्ध में जाऊँ अर्ज करी थी । ये शिक्षा तुमने ही भरी थी ।।
तुमरी आज्ञा पाकर जाऊँ । बिन आज्ञा नहीं कदम बढाऊँ ।।
अहिलवती बोली कुछ रुककर । लाल की ओर पलक में मुड़कर ।।

चौ. - सोचूं समझूँ मैं समझ गई, तीनों लोक का नारा है ।
हे पार्वती माँ आ जाओ, बस तेरा एक सहारा है ।। क ।।
होनी होती होकर रहती, चलता नहीं कोई चारा है ।
लज्जवन्ती सत्तवन्ती आओ, हृदय ने तुम्हे पुकारा है ।। १२४ ।।

दोहा - बर्बरीक ने सोचकर, कर विनती प्रणाम ।
कौन ताऊ और कौन पिता, नहीं बताओ नाम ।। क ।।
तुम्ही पिता और ताऊ हो, प्राणों के भी प्राण ।
तुमने ही जननी दीन्यो, इस जीवन को दान ।। १२५ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
मैनें पहले कह भी दिया है । हुक्म अदूली नहीं किया है ।।
नहीं जाऊँगा रण के मांही । तुम कह दोगी होगी वाही ।।
अहिलवती ने धीरज धर कर । भेद बताया है रुक रुक कर ।।
क्षत्री बालक रण में जावे । मात मना नहीं करने पावे ।।
क्षत्राणी की यही निशानी । रण के मांही दे जिन्दगनी ।।
अँगारों में लपटे उछले । चाहे रण में अग्नि उबले ।।
तुमने लाल मुझे वचन सुनाया । रण देखने का मता उपाया ।।

तुमको आज्ञा मैं देती हूँ । भेद की बतियां कुछ कहती हूँ ।।
वचन विमुख नहीं होना लाला । हार से तुम नहीं लेना टाला ।।
ये पहिले भी ज्ञान दिया था । लाड़ प्यार से बड़ा किया था ।।
अब तुम अपने पिता के प्यारे । मुझसे जुदा हो मेरे दुलारे ।।
युद्ध में निश्चय तुमको जाना । पहनाऊँ केशरिया बाना ।।
अपने पिता से जाकर कहना । मात ने पहनाया यह बाना ।।
आओ तिलक करूँगी तुम्हारे । विजयी होकर आओ दुलारे ।।
लेऊँ आरती लाल तुम्हारी । युद्ध में जाओ हे बलधारी ।।

दोहा - बीच शिवालय आ गये, उड़ीके पहरेदार ।
माँ बेटे में आज हो गई, ये कैसी तकरार ।। क ।।
सेवक गण यही सोचते, झुककर करी प्रणाम ।
अहिला कहती लाल से, जावो पिता के धाम ।। १२६ ।।

अहिलवती अपने पुत्र को रण में जाने के लिए विदा करती है

दोहा - बर्बरीक शीश नवाय कर, पकड़े मात के पांव ।
रण में जो निगरानी रखे, ममता गहरी छांव ।। क ।।
चरण की रज माथे धरी, चला वीर बलवान ।
अहिलवती ने पुष्प बिखेरे, लिपटी शिव भगवान ।। १२७ ।।

।। भजन ।।

टप टप लीला घोड़ा, चाल रहा युद्ध भूमि की ओर,
युद्ध भुमि की ओर जिसपे बैठा एक किशोर ।। टेर ।।

अहिलवती का पुत्र लाडला, पांडव कुल में जाया हो श्याम,
घुंघराले बालों के कारण बर्बरीक कहलाया ।। १ ।।

अग्निदेव से धनुष मिला, जिसे कांधे बीच उठाया हो श्याम
तीन बाण तरकस में साजे, शिव भोले से पाया ।। २ ।।

युद्ध करन की है अभिलाषा, बहुत घनेरी मन में हो श्याम,
माँ के दूध की लाज निभाऊँ, महाभारत के रण में ।। ३ ।।

नस-नस में जोश वीर के, कुरुक्षेत्र में पहुँचा हो श्याम,
जब तक सूरज चाँद रहेगा, नाम तेरा रहे ऊँचा ।। ४।।

श्रीकृष्ण ने देखा तुझको, तेरे सन्मुख आये हो श्याम,
देख के माधव चकित रह गये, तुझे समझ ना पाये ।। ५ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
चला वीर रण देखने तांई । माता कही वो पकड़ी राही ।।
तीन बाण कन्धे पर सोहते । तन का बाना मन को मोहते ।।
लाल तिलक माथे अति चमके । के रक्त को उजलो दमके ।।
आगे कदम बढ़ावे वीरा । मुख पर चमके तेज गम्भीरा ।।
जल्दी जल्दी पाँव धरत है । वापस भी मुड़ मुड़ देखत है ।।
मात की याद हिलोरा देवे । हृदय मांही समझ यह लेवे ।।
हवा चले सर सर लहरावे । केसरिया बानो फहरावे ।।
मात की बतियां याद सतावे । उठ उठ हृदय में दब जावे ।।
तेज धूप चम चम कर चमके । मिट्टी गरम लाल बनी दमके ।।

दोहा - एक तालाब सुहावना, घने पेड़ के छाँव ।
प्यास लगी थी वीर बली को, रुक गये देख के पाँव ।। क ।।
जल के किनारे बैठ कर, करते सम विश्राम ।
जल पी करके प्यास बुझाई, हो रही थी शाम ।। १२८ ।।